

Shri Chewang Norphel

Shri Chewang Norphel, better known as Ladakh's Glacier Man, is a retired civil Engineer of Rural Development Department, Jammu and Kashmir. He is known for developing an innovative Artificial Glacier Technology, now a universally known technology recognized as a unique simple, cost effective and potential means of high altitude water harvesting and conservation technique.

2. Born on December 22, 1936 in a middle class family of Leh, Shri Norphel completed Diploma Course in Civil Engineering from Lucknow in 1960. In June 1960 he joined the Rural Development Department of Jammu and Kashmir in Ladakh as a civil engineer. He is known for making artificial glacier in winter so that villages can get water in summer for their fields. His artificial glaciers enable villagers to get water a full month before the natural glacier starts melting on high mountain tops.

3. Shri Norphel hit upon the idea of diverting the water to a convenient spot and releasing it through many small outlets towards down slope of hills. A series of rubble stone masonry in crate wire are made at suitable intervals on the hill side to enable the water accumulate. Natural Resource Management Norphel's Technology of Artificial Glacier has been boon for many of the villages in addressing the acute water scarcity for agriculture and other human need. The artificial glacier is an intricate network of water channels and dams along the upper slopes of the villages at high altitude ranging from 13000 feet's and above. The glacier runoff is stored at different altitude above the village during three to four winters months where there are no agricultural activities. Water is crucial for farming as dry land cultivation is not possible in the entire area. The artificial glaciers thus created ensure regular water availability resulting in high productivity and high return. It also helps recharging ground water aquifers besides numerous other benefits. So far ten artificial glaciers have been created in those villages which often under goes serious water shortages for agricultural operation. .

4. Shri Norphel's great work on artificial glaciers and water conservation has been recognized and very well decorated with national and international awards. So far he has got 14 awards which include Best Rural Engineering Award by President of India 1998; Far Eastern Economic Review by Gold Asian Innovation Award of Hongkong 1999; Limca Book of records 2006; Jamnalal Bajaj Foundation Award by President of India 2010; Real Hero Award by CNN-IBN & Reliance 2008 etc.

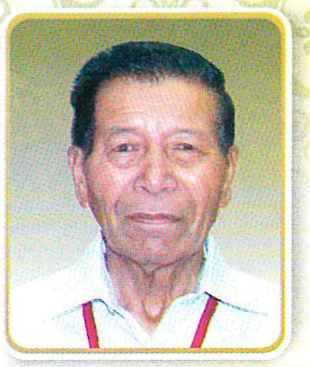

श्री छेवांग नोरफेल

श्री छेवांग नोरफेल को लद्दाखी ग्लेशियर मैन के रूप में अधिक जाना जाता है। आप ग्रामीण विकास विभाग, जम्मू और कश्मीर के सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर हैं। आपको नवोन्मेषी कृत्रिम ग्लेशियर प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए जाना जाता है। अब यह तकनीक सार्वभौमिक रूप से ज्ञात प्रौद्योगिकी है जिसे ऊंचाई वाले स्थानों पर सामान्य, किफायती और जल-दोहन और सरंक्षण की विशिष्ट तकनीक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

2. आपका जन्म लेह के मध्यम वर्ग के परिवार में दिसम्बर 22,1936 को हुआ। आपने लखनऊ से सन् 1960 में सिविल इंजीनियरिंग का डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा किया। जून, 1960 में आपने सिविल इंजीनियर के रूप में लद्दाख में जम्मू और कश्मीर के ग्रामीण विकास विभाग में कार्य प्रारंभ किया। सर्दियों में कृत्रिम ग्लेशियर बनाने के लिए आपको जाना जाता है ताकि ग्रामीण लोग अपने खेतों के लिए ग्रीष्म ऋतु में पानी प्राप्त कर सकें। पहाड़ की ऊंची चोटियों से ग्लेशियर के स्वाभाविक रूप से गलने से पहले आपके कृत्रिम ग्लेशियर से गांव के लोगों को पूरे महीने पानी मिल पाता है।

3. आपके मन में यह विचार आया कि सुविधाजनक स्थान से पानी को दूसरी ओर ले जाया जाए और इसे पहाडियों की ढलानों की ओर कई छोटे-छोटे मार्गों से बहाया जाए। पहाड़ी पर उचित अंतरालों पर क्रेट वायर में रोड़ी पत्थर की चिनाई की जाती है ताकि पानी जमा हो सके। कई गांवों के लिए नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट नोर्फेल्स टेक्नोलॉजी ऑव आर्टिफिशियल ग्लेशियर, कृषि और मानव की अन्य ज़रूरतों के लिए पानी की अत्यधिक कमी को पूरा करने के लिए वरदान साबित हुआ है। 13000 फीट और इससे अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर स्थित गांवों के ऊपरी ढलानों के साथ कृत्रिम ग्लेशियर, वाटर चैनलों और डैमों का जटिल नेटवर्क है। सर्दियों के तीन से चार महीनों के दौरान गांव के ऊपर ऐसी अलग-अलग ऊंचाइयों पर ग्लेशियर के प्रवाह को संचित किया जाता है जहां पर कृषि कार्य नहीं किया जाता है। चूंकि संपूर्ण क्षेत्र में शुष्क खेती संभव नहीं है इसलिए खेती के लिए पानी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार बनाए गए कृत्रिम ग्लेशियर से नियमित रूप से पानी मिलता है, जिससे अधिक उत्पादन होता है और अधिक लाभ प्राप्त होता है। इससे दूसरे कई अन्य लाभ प्राप्त होने के अलावा, यह भू-जल को रिचार्ज करने में भी मदद करता है। अभी तक उन गांवों में दस कृत्रिम ग्लेशियर बनाए गए हैं जो कृषि कार्य के लिए अक्सर गंभीर जल संकट से गुजरते थे।

4. कृत्रिम ग्लेशियर और जल संरक्षण के आपके महान कार्य को मान्यता प्रदान की गई है जिसके लिए आपको राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अब तक आपको 14 पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा सन् 1998 में बेस्ट रूरल इंजीनियरिंग पुरस्कार; सन् 1999 में गोल्ड एशियन इन्नोवेशन द्वारा हांगकांग का फॉर ईस्टर्न इकोनॉमिक रिव्यू पुरस्कार; लिम्का बुक ऑव रिकार्ड्स 2006; भारत के राष्ट्रपति द्वारा सन् 2006 में जमनालाल बजाज फाउंडेशन पुरस्कार; सी एन एन-आई बी एन और रिलायंस द्वारा सन् 2008 में रियल हीरो पुरस्कार आदि शामिल हैं।